IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मेनार ग्राम का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय अध्ययन : मेवाड़ की लोकस्मृति और विरासत के विशेष संदर्भ में

मधु मेनारिया

विद्यार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

मेनार, वल्लभनगर, उदयपुर

सार (Abstract)

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र भारत के उन ऐतिहासिक क्षेत्रों में से एक है जिसने अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, वीरता, लोकजीवन तथा प्राकृतिक विरासत के माध्यम से विशिष्ट पहचान बनाई है। इस क्षेत्र के अनेक ग्राम केवल भौगोलिक इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि वे इतिहास, संस्कृति, लोकविश्वास और सामुदायिक जीवन के जीवंत केंद्र हैं। उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित मेनार ग्राम ऐसा ही एक महत्वपूर्ण ग्राम है, जिसने अपने ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक परंपराओं, लोक-सांस्कृतिक उत्सवों तथा पक्षी संरक्षण की सामुदायिक परंपरा के कारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की है। मेनार गांव का जमराबीज का त्यौहार अपनी ऐसी ऐतिहासिकता लिए हुए राजस्थान तथा पूरे भारत में प्रसिद्ध है, साथ ही प्रवासी पक्षियों के आश्रय-स्थल के रूप में विशेष पहचान रखता है। मेनार गांव ने बरसों से पक्षी संरक्षण की अपनी परंपरा को जीवंत रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। सामुदायिक प्रयास एवं सतत संघर्ष का परिणाम यह निकला है कि मेनार को प्रस्तावित रामसर साइट घोषित किया गया है। मेनार के तालाब में प्रवासी पक्षियों के महत्वपूर्ण आवास स्थल हैं। शीतकाल में यहाँ 150 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ प्रवास के लिए आती हैं, जिसके कारण मेनार को 'बर्ड विलेज' के रूप में पहचान मिली है। मेनार ग्राम मेवाड़ की ऐतिहासिक चेतना, सामुदायिक एकता और प्रकृति संरक्षण का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

कुंजीशब्द: मेनार, मेवाड़, जमराबीज, बारूदी होली, वेटलैंड, लोकस्मृति, सांस्कृतिक विरासत

1. भूमिका

मेवाड़ का इतिहास शौर्य, स्वाभिमान और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक रहा है। इस क्षेत्र के अनेक गाँवों ने स्थानीय इतिहास, लोकपरंपराओं और सामाजिक संरचना को संरक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित मेनार ग्राम इन्हीं विशिष्ट ग्रामों में से एक है। मेनार अपनी ऐतिहासिक लोकस्मृतियों, धार्मिक आस्थाओं, बारूदी होली, तलवारों की जबरी गैर तथा प्रवासी पक्षियों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि ग्राम की सांस्कृतिक पहचान अत्यंत समृद्ध है।

मेनार ग्राम राजस्थान के उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित है। यह उदयपुर नगर से लगभग 45 किलोमीटर पूर्व दिशा में अवस्थित है। ग्राम राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्य राजमार्ग से जुड़ा हुआ है, जिससे यहाँ आवागमन सुगम है। ग्राम पंचायत की अनुमानित जनसंख्या लगभग 9,000 से 10,000 है। यहाँ कृषि, पशुपालन तथा सेवा क्षेत्र प्रमुख आजीविका के साधन हैं। बड़ी संख्या में ग्रामीण देश-विदेश में पाक-कला (Cooking) और पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।

स्थानीय परंपराओं के अनुसार मेनार की स्थापना प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों की तपस्थली के रूप में हुई थी। जनश्रुतियों में इसका संबंध राजा मान्धाता से भी जोड़ा जाता है।

मेनार की ऐतिहासिक पहचान मुख्यतः "जमराबीज" की परंपरा से निर्मित होती है। मेनार के जमराबीज का गौरवशाली इतिहास:

महाराणा प्रताप के अंतिम समय में जब समूचे मेवाड़ में जगह-जगह मुगल सैनिक छावनियाँ डाले पड़े थे, उस दौरान मुगलों ने मेवाड़ को अपने अधीन करने की पूरी कोशिश की थी। लेकिन महाराणा अमर सिंह प्रथम के नेतृत्व में हमेशा मुगलों को मुँह की खानी पड़ी। मुगलों की एक मुख्य चौकी उठाला वल्लभगढ़ (वर्तमान वल्लभनगर) में स्थापित थी, जिसकी एक उपचौकी मेनार गांव में थी। महाराणा प्रताप के निधन के बाद मुगलों के आतंक से त्रस्त होकर मेनार के मेनारिया ब्राह्मणों ने योजनाबद्ध तरीके से मुगल सेना को यहाँ से हटाने की योजना बनाई थी।

ओंकारेश्वर चबूतरे पर निर्णय लेकर यहाँ के ग्रामीणों ने मुगलों की चौकी पर एक साथ हमला बोल दिया और युद्ध में मुगलों के सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। यह दिन विक्रम संवत 1657 (सन 1600) चैत्र सुदी द्वितीया का था, इस युद्ध में मेनारिया ब्राह्मण भी वीरगति को प्राप्त हुए थे। मुगलों से जीत की खुशी में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह प्रथम ने मेनार के ग्रामीणों को शौर्य के उपहार स्वरूप शाही लाल जाजम, नागौर के प्रसिद्ध रणबांकुरे ढोल, और सिर पर कलंगी धारण करने का अधिकार दिया। वहीं आजादी तक मेनार गांव की 52 हजार बीघा जमीन पर किसी प्रकार का लगान नहीं वसूला गया। स्थानीय परंपराओं के अनुसार इस विजय के उपलक्ष्य में ग्रामीणों को शाही सम्मान प्रदान किए गए तथा 52 हजार बीघा भूमि पर लगान माफ किया गया। इन तथ्यों का व्यापक अभिलेखीय सत्यापन अभी अपेक्षित है।

देशभर में होली का पर्व रंगों का है लेकिन इस दिन मेवाड़ में होली का अनूठा रंग देखने को मिलता है। जिला मुख्यालय से 45 किमी दूर 'बर्ड विलेज' नाम से प्रख्यात मेनार गांव में धुलंडी के अगले दिन शौर्य-इतिहास की झलक देखने को मिलती है। यहाँ रंगों से नहीं बल्कि बारूद से होली खेली जाती है जिसमें तलवारों और बंदूकों की आवाज से हूबहू युद्ध का दृश्य देखने को मिलता है। इस दिन पांच हांस (मोहल्ला) से ओंकारेश्वर चौक पर मेनारवासी मेवाड़ी पोशाक में सज-धज कर योद्धाओं की भाँति ढोल की थाप पर कूच करते हुए हवाई फायर और तोपों से गोले दागते हैं।

इसी मध्य रात्रि को विख्यात तलवारों की "जबरी गैर" भी खेली जाती है। क्षत्रिय योद्धाओं की भाँति सजे-धजे पुरुष ढोल की थाप पर एक हाथ में खांडा और दूसरे हाथ में तलवार लेकर गैर नृत्य करते हैं। पटाखों की गर्जना के बीच तलवारों की खनखनाहट यहाँ के माहौल को युद्ध का मैदान बना देती है। इसकी तैयारियाँ 1 महीने पूर्व से ही शुरू हो जाती हैं। यहाँ दीपावली से भी ज्यादा उत्साह जमराबीज पर नजर आता है। अन्य राज्यों और विदेशों में कार्यरत

गांव के युवा भले ही दीपावली पर गांव न भी आएं, लेकिन जमराबीज पर्व पर अवश्य ही गांव आ जाते हैं। यहाँ के मेनारिया ब्राह्मणों ने मुगलों से हुए युद्ध में विजय प्राप्त कर मुगलों के थाने को यहाँ से खदेड़ दिया था। इसी खुशी में यहाँ के ग्रामीण पिछले सवा 400 वर्षों से जमराबीज त्यौहार मनाने की परंपरा चली आ रही है। इस दिन गांव का मुख्य ओंकारेश्वर चौक सतरंगी रोशनी से सजाया जाता है और दिनभर ओंकारेश्वर चौराहे पर रणबांकुरा ढोल बजता है।

जमराबीज के दिन दोपहर 1 बजे के करीब शाही लाल जाजम ओंकारेश्वर चबूतरे पर बिछाई जाती है जहाँ पर मेनारिया ब्राह्मण समाज के 52 गाँवों के मोतबीरान पंच मेवाड़ की पारंपरिक वेशभूषा में शामिल होते हैं। फिर देर रात 9 बजे से मुख्य कार्यक्रम शुरू होता है जो भोर तक चलता है।

यहाँ तलवारों से खेली जाती है जबरी गैर

गैर नृत्य भारत में राजस्थान का पारंपरिक, प्रसिद्ध और सुंदर लोक नृत्य है। गैर नृत्य को गैर घालना, गैर घुमाना, गैर खेलना, गैर नाचना के नाम से भी जाना जाता है। मेनार की 'जबरी तलवारों की गैर' के नाम से यह देश भर में विख्यात है। आमतौर पर, नर्तक अपने हाथ में खांडा (लकड़ी की छड़ी) के साथ एक बड़े वृत्त में नाचते हैं। यह नृत्य पुरुषों द्वारा किया जाता है। लेकिन मेनार में खेली जाने वाली जबरी गैर इससे उलट है; यहाँ सिर्फ पुरुष ही गैर खेलते हैं और वो भी हाथों में नंगी तलवारें लेकर खेलते हैं। इस नृत्य से युद्ध की अग्रिम पंक्ति की अनुभूति होती है। नृत्य में इस्तेमाल की गई छड़ी को खांडा कहा जाता है। गोल घेरे में इसकी संरचना होने के कारण ही इसे 'गैर' कहा जाता है। इसमें पुरुषों की टोली हाथों में लंबी डंडियाँ लेकर ढोल व थाली-मांदल वाद्य की ताल पर वृत्ताकार घेरे में नृत्य करते हुए मंडल बनाती है। इस नृत्य में तेजी से पद संचालन और डंडियों की टकराहट से तलवारबाजी या पट्टा-युद्ध का आभास होता है। अंत में रात्रि 12 बजे के बाद चमकती शमशीरों (तलवारों) के साथ गाँव के बुजुर्गों एवं युवाओं द्वारा खेली जाने वाली गैर व तलवारबाजी तथा आग के गोलों से खेलना शौर्य का चरम प्रदर्शन करता है।

पक्षियों के लिए स्वर्ग हैं मेनार के जलाशय

सदियों से जलाशयों और परिंदों का संरक्षण करने के लिए मशहूर मेनार के जलाशय परिंदों के अनोखे संसार के लिए स्वर्ग जैसे हैं, जहाँ 200 से अधिक प्रजातियों के पक्षी निर्भीक विचरण करते हैं। मेनार की आबोहवा परिंदों के लिए इतनी मुफीद है कि शीतकालीन प्रवास पर आने वाले एक सुंदर पक्षी **ग्रेट क्रेस्टेड ग्रीब (Great Crested Grebe)** ने मेनार को अपना स्थायी ठिकाना बना लिया है और पिछले कई सालों से मेनार में ही ब्रीडिंग (प्रजनन) कर रहा है, जिससे आसपास के जलाशय भी इस प्रजाति से पॉपुलेटेड हुए हैं।

सदियों से पक्षियों के संरक्षण का वृत्तांत:

लुइस राउसले नामक एक लेखक ने अपने यात्रा वृत्तांत में लिखा है कि कैसे वह अपने 50 लोगों के दल के साथ 6 मार्च 1889 को मेनार पहुँचा और तालाब किनारे पेड़ों के नीचे पड़ाव डाला। उसने तालाब में कमल के पत्ते पर बैठी वाइल्ड डक्स (जंगली बत्तखों) को भोजन के लिए शूट (शिकार) करना शुरू किया, तो इतने पक्षी उड़े कि लगा सूरज बादलों की ओट में छिप गया हो। लेकिन यह शिकार करना तब उसे भारी पड़ गया जब एक मोटा-तगड़ा ब्राह्मण आया और उन्हें धमकाया कि मेनार एक पवित्र भूमि है और शिकार करना सर्वथा वर्जित है।

लेखक ने कहा कि उसके पास महाराणा का लिखित परवाना (स्वीकृति) है कहीं पर भी ठहरने और भोजन के लिए शिकार करने का, और इस तरह उसने मुखिया से मिलना चाहा। सायंकाल जब वह मुखिया के पास गया, तो मुखिया ने भी अपने राजदंड नुमा हथियार से लेखक पर आक्रमण करते हुए चेतावनी दे डाली कि "यह पवित्र भूमि है, यहाँ मेवाड़ महाराणा का परवाना भी नहीं चलता, शिकार सर्वथा वर्जित है। आप इन पक्षियों को नहीं मार सकते। यहाँ से 3 कोस दूर चले जाओ।" मजबूरन लेखक को मेनार छोड़कर आगे बढ़ना पड़ा।

यह घटनाक्रम यह दर्शाता है कि मेनार गांव के बाशिंदे सैकड़ों वर्ष पूर्व भी जल संरक्षण के साथ-साथ पक्षियों के संरक्षण के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तत्पर थे और यह परंपरा आज भी कायम है। इसी घटनाक्रम पर

स्थानीय पक्षीविद दर्शन मेनारिया के निर्देशन में एक शॉर्ट फिल्म बनाई गई है जिसका टाइटल है **"पक्षी मित्र: द स्टोरी ऑफ मेनार"**, जो राउंडग्लास सस्टेन समूह द्वारा निर्मित है। इसी वजह से आज देश-विदेश से लगभग 200 से भी अधिक प्रजाति के परिंदे मेनार के दोनों जलाशयों—**भरमेला (ब्रह्म सागर)** व **धंड तालाब** में विचरण करते हैं।

मेनार के जलाशयों से जुड़ी विशिष्टताएँ:

1. जलाशयों का पानी सिंचाई या अन्य उद्देश्य से बाहरी उपयोग में नहीं लिया जाता है।
2. इन जलाशयों में आज दिन तक मछली पकड़ने का ठेका नहीं दिया गया है।
3. जलाशय पूर्णतया स्थानीय लोगों द्वारा संरक्षित हैं।
4. किसी प्रकार की शिकार संबंधी गतिविधि इन जलाशयों में या आसपास नहीं होने दी जाती है।
5. विगत वर्षों में स्थानीय बड़े-बुजुर्गों ने निर्णय लेकर खरबूजे की खेती (जिससे गांव को आय होती थी) का ठेका भी पक्षियों की वजह से बंद कर दिया।
6. हाल के दिनों में मेनार के जलाशयों पर PhD Scholars द्वारा अनुसंधान भी हुए हैं।
7. भरमेला तालाब के किनारे 68 फीट ऊँची शिव प्रतिमा धार्मिक पर्यटन व ब्लॉगर्स के प्रमुख आकर्षण का केंद्र रही है।
8. यहीं बॉलीवुड फिल्म **"धड़क"** को फिल्माया गया है।

मेनार के पक्षी संरक्षण की परंपरा पर 2020 में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म मेकर गुंजन मेनन द्वारा बनाई गई डॉक्यूमेंट्री **"विंग्स ऑफ होप - अ बर्ड विलेज एंड देयर बर्ड्स" (Wings of Hope)** को संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) में विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रदर्शित किया गया और इसे अंतर्राष्ट्रीय जैकसन वाइल्ड व्यूअर्स चॉइस अवार्ड मिला।

मेनार गाँव ने वर्षों से पक्षी संरक्षण की अपनी परंपरा को जीवंत रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। सामुदायिक प्रयासों और सतत संघर्ष का परिणाम यह निकला कि अब मेनार को **प्रस्तावित रामसर साइट** के रूप में घोषित किया गया है। यह उपलब्धि न केवल गाँव वासियों की दृढ़ता और समर्पण को दर्शाती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उन्नति को भी रेखांकित करती है। यहाँ स्थित धंड तालाब और ब्रह्म सागर (भरमेला) तालाब सैकड़ों प्रजातियों के पक्षियों को आश्रय प्रदान करते हैं, जिससे मेनार 'बर्ड विलेज' के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ है। यह मान्यता स्थानीय समुदाय के अथक प्रयासों की जीत है।

मेनारवासियों के सदियों से चले आ रहे प्रकृति और पक्षी संरक्षण के प्रयासों की न केवल वैश्विक मान्यता है, बल्कि भारत की वेटलैंड विरासत में एक महत्वपूर्ण योगदान भी है। मेनार गांव के बुजुर्गों और स्थानीय समुदाय ने पीढ़ियों से पक्षियों और जलाशयों की रक्षा की है। यह वही गांव है, जहां अंग्रेजों द्वारा एक पक्षी के शिकार करने के प्रयास पर पूरे गांव ने उनका हुक्का-पानी बंद कर दिया था। यह दर्शाता है कि यहां के लोग प्रकृति और जीवों के प्रति सदियों से कितने संवेदनशील रहे हैं।

मेनारवासियों का पक्षियों और जलाशयों के प्रति प्रेम और संरक्षण का संकल्प अब वैश्विक स्तर पर सराहा जा रहा है। यह उपलब्धि न केवल मेनार गांव बल्कि पूरे राजस्थान और मेवाड़ क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। मेवाड़ के ऐतिहासिक गाँव मेनार ने जलाशयों को संरक्षित करने की अद्वितीय मिसाल पेश की है। मेनार वासियों का समर्पण यह साबित करता है कि यदि समुदाय संगठित होकर काम करे, तो प्रकृति और वन्यजीवों की रक्षा को एक स्थायी परंपरा में बदला जा सकता है। नतीजतन मेनार आज विश्व विख्यात हो चुका है।

रामसर घोषणा और मेनार वासियों का सदियों से संरक्षण & समर्पण जिनसे जलाशय सदियों से सुरक्षित रहे:

मेनारियों ने अंग्रेजों का हुक्का-पानी बंद कर दिया था:

मेनार में जलाशयों की सुरक्षा और पक्षियों के संरक्षण की परंपरा सदियों पुरानी है। 19वीं शताब्दी में अंग्रेज यात्री जॉन टिल्टसन द्वारा लिखित पुस्तक **"पिक्चरेस्क सीनरी इन इंडिया"** में इसका जिक्र मिलता है कि जब एक ब्रिटिश अधिकारी ने पक्षी का शिकार किया, तो गांववासियों ने उसका हुक्का-पानी तक बंद कर दिया। यह घटना बताती है कि मेनार में पक्षी संरक्षण कितना महत्वपूर्ण रहा है।

सामुदायिक समर्पण: ना सिंचाई, ना मछली का ठेका

यहाँ की जनता ने अपने बुजुर्गों द्वारा बनाए नियमों को आज तक निभाया है। जलाशयों का पानी सिंचाई के लिए इस्तेमाल नहीं होता, जिससे यहाँ की जलीय परिस्थितियाँ पक्षियों के अनुकूल बनी रहती हैं। शुरू से यहाँ मछली पकड़ने का ठेका नहीं दिया जाता है, जिससे प्रवासी पक्षियों को भरपूर भोजन मिलता है। मेनार क्षेत्र में शिकार पर पूरी तरह से पाबंदी है, जिससे स्थानीय व प्रवासी पक्षी यहाँ बिना किसी खतरे के प्रवास कर सकते हैं।

पक्षियों के लिए खेती पूरी तरह बंद कर दी गई:

कुछ वर्ष पहले तालाब सूखने पर यहाँ खेती की जाती थी, जिससे ग्रामीणों को आय प्राप्त होती थी। लेकिन जब पता चला कि खेती के लिए उर्वरक (फर्टिलाइजर) और पेस्टीसाइड उपयोग में लिया जाता है जो पक्षियों के लिए नुकसानदेह है, तो इसे तुरंत बंद कर दिया गया। पिछले कई वर्षों से ग्रामीणों ने इस परंपरा को पक्षियों के हित में पूरी तरह समाप्त कर दिया। अब तालाब क्षेत्र में कोई खेती नहीं होती, ताकि परिंदों का प्राकृतिक आवास बना रहे।

पेड़ लगाने की परंपरा:

दशकों से तालाब की पाल और अपने खेतों पर आम का पेड़ बोने की एक परंपरा सी है। करीब हर परिवार के घर का सदस्य तालाब की पाल या अपने खेत की मेड़ पर एक आम का पेड़ जरूर बोता है, साथ ही उसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी लेता है। यही वजह है कि आज इस गांव के दोनों तालाबों की पाल पर आम के सैकड़ों पेड़ लगे हैं। ये पेड़ छांव देने के साथ-साथ प्रकृति को संरक्षण एवं जीव-जंतुओं को आश्रय स्थल भी प्रदान करते हैं।

मेनार की मुख्य धरोहर एवं प्राचीन स्थल:

1. प्राचीन ठाकुर जी का मंदिर (प्रताप के समय का सूरह लेख):

गांव के मध्य स्थित ठाकुर जी का मंदिर अत्यंत प्राचीन है। ठाकुर जी मंदिर के निर्माण की नींव करीब सन 1325 में रखी गई थी, जो 97 साल बाद वर्ष 1425 में पूरा हुआ था। मंदिर का निर्माण कार्य राणा लाखा के समय पूर्ण हुआ था। मंदिर पर ध्वजा चढ़ाने का उल्लेख प्राचीन समय के सूरह लेख पर मिलता है, जिसमें सन 1596 में महाराणा प्रताप के समय ध्वजा चढ़ाने का जिक्र मेवाड़ी भाषा में लिखे जर्जर अभिलेख पर मिलता है। इसपर ध्वज चढ़ाने एवं समस्त न्यात (समुदाय) के साक्षी रहने का उल्लेख मिलता है। उस पर यह उत्कीर्ण है—*"जो भी इस मंदिर के दर्शन करने आता है उनको ग्रामीणों का नमस्कार है।"* मेनार ठाकुरजी मंदिर का उल्लेख श्री कृष्ण जुगनू की **"महाराणा प्रताप युग"** पुस्तक में भी मिलता है।

2. अम्बामाता मंदिर (गुजरात से आई ज्योति, 50 लाख की लागत से ग्रामीणों ने 10 साल में बनाया शिखर मंदिर):

यह मंदिर 600 साल पुराना है। इससे पूर्व भी यहाँ मंदिर था लेकिन समय की आपदा के साथ उजड़ गया। स्थापना से लेकर इस मंदिर का तीसरी बार जीर्णोद्धार हुआ है, जो अंतिम बार 2015 में पूर्ण हुआ। इससे पूर्व विक्रम संवत 2036 में जीर्णोद्धार एवं स्वर्ण कलश स्थापना हुई थी। प्रथम जीर्णोद्धार का लिखित उल्लेख नहीं है, लेकिन हाल ही में ग्रामीणों द्वारा जनसहयोग से करीब 50 लाख रुपये खर्च कर शिखर मंदिर का निर्माण करवाया गया। हर घर से जैसे-जैसे राशि इकट्ठी होती गई, वैसे-वैसे मंदिर निर्माण होता गया। ऐसे ही जनसहयोग से बने इस मंदिर को बनने में 10 साल का लंबा समय लगा। मंदिर का प्रवेश द्वार संगमरमर का बनाया गया है, जिसके दोनों तरफ अम्बे मां के वाहक (सिंह) की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। पानी के हिलोरे से मंदिर भवन को क्षति न हो, इसके लिए पीछे की तरफ 30 फीट ऊँची दीवार बनाकर भवन निर्माण किया गया।

3. 68 फीट की विशाल शिव प्रतिमा (गांव को अनूठी पहचान दिलाने शिव भक्त प्रभु जोशी ने बनवाई थी शिव प्रतिमा):

यह मेनार में ब्रह्म सागर तालाब की पाल पर स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग से गुजरने वाले यात्रियों का ध्यान यह बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इस विशाल शिव प्रतिमा के निर्माण का सपना मेनार के समाजसेवी और शिव भक्त प्रभु लाल जोशी एवं ग्रामीणों के निष्ठावान प्रयासों से 2008 में साकार हुआ था। प्रभु लाल जोशी ही 'नाटूर्स टूर्स एंड ट्रेवल्स इंडिया एंड अब्रॉड' के मालिक हैं। उन्होंने भारत के कई दर्शनीय स्थलों से प्रभावित होकर अपनी जन्मभूमि को भी पर्यटन के क्षेत्र में सिरमौर बनाने और अपने गांव की अलग पहचान बनाने के लिए इस मूर्ति का निर्माण करवाया था। मूर्ति बनने के बाद से पिछले 17 सालों में यह सरोवर कभी खाली नहीं हुआ है। ब्रह्म सागर सरोवर किनारे स्थित यह 68 फीट की शिव प्रतिमा उदयपुर क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरे संभाग के लिए प्रमुख आस्था का केंद्र है। शिव जी के सम्मुख विशाल तालाब है।

4. फिल्म डेस्टिनेशन बना यह शिव धाम:

ब्रह्म सागर की पाल पर स्थित यह शिव प्रतिमा और तालाब का किनारा मूवी शूटिंग के लिए ग्रामीण क्षेत्र का हॉट डेस्टिनेशन बन चुका है। इन्हीं शिव के चरणों में दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी की पुत्री जाह्नवी कपूर की **"धड़क"** मूवी का मुहूर्त शॉट शूट हुआ था, वहीं 'सूर्यप्रथा' सहित अनेक फिल्मी गाने यहाँ फिल्माए गए हैं।

सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

परंपरागत रूप से मेनार की अर्थव्यवस्था कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है। जल संरक्षण की स्थानीय परंपराओं के कारण यहाँ के तालाब केवल सिंचाई का साधन नहीं रहे, बल्कि सामाजिक और धार्मिक जीवन के भी केंद्र बने। ग्राम में सामुदायिक सहयोग की परंपरा ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मेनार ग्राम पंचायत की जनसंख्या 9 हजार के करीब है। यहाँ से लगभग 400 लोग अन्य राज्यों एवं विदेशों में कार्यरत हैं। अमूमन 18 से 20 देशों में यहाँ के प्रवासी कार्यरत हैं, जो मुख्य रूप से कुक (महाराज - शेफ) के रूप में खाना बनाने का काम करते हैं। वहीं देश के अन्य राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, मध्य प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में भी कार्यरत हैं। अधिकतर लोग रसोई बनाने का कार्य करते हैं, वहीं 150 के करीब लोग देशभर के विभिन्न हिस्सों में टूरिज्म सेक्टर से जुड़े हुए हैं।

विदेशों में मुख्य रूप से दुबई, हांगकांग, लंदन, अमेरिका, बेल्जियम, चीन, ओमान, मस्कट, इंग्लैंड, जापान, अफ्रीका, मॉरीशस, न्यूयॉर्क, केन्या, कुवैत में यहाँ के लोग अलग-अलग सेक्टर्स में कार्यरत हैं। अभी लॉकडाउन (कोरोना काल) के कारण अधिकांश प्रवासी घर लौट आए थे और यहीं छोटा-मोटा काम-धंधा शुरू करने की कोशिश में जुटे हुए हैं। इस कोरोना काल में शहरों की अपेक्षा गाँवों की ज़िन्दगी आसान और मुफीद साबित हो रही

है जहाँ लोगों को उतना भय नहीं है; फाकाकशी (भूखमरी) की नौबत यहाँ कभी नहीं आएगी। यहाँ सरकारी महकमे में भी 100 से अधिक लोग हैं, जिनमें से अधिकतर शिक्षक हैं।

संदर्भ सूची

1. जुगनू, श्रीकृष्ण। **महाराणा प्रताप युग**। उदयपुर।
2. शर्मा, गोपीनाथ। **मेवाड़ का इतिहास**। उदयपुर।
3. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद। **उदयपुर राज्य का इतिहास**। अजमेर।
4. टॉड, जेम्स। **एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान** (Annals and Antiquities of Rajasthan)।
5. **राजस्थान राज्य अभिलेखागार**, बीकानेर।
6. **मेनार ग्राम पंचायत अभिलेख**।
7. स्थानीय **शिलालेख एवं मौखिक साक्षात्कार** - उमेश मेनारिया (पत्रकार), दर्शन मेनारिया (स्कूल व्याख्याता), दुर्गा शंकर मेनारिया (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक)।
8. **दैनिक भास्कर**, उदयपुर संस्करण।
9. **वेटलैंड संरक्षण संबंधी सरकारी प्रतिवेदन**।